❋ 19 जून 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] जहाँ तक बाप है पढ़ाई चलनी ही है। फिर पढ़ाई भी बन्द हो जायेगी। इन बातों को तुम्हारे सिवाए कोई भी नही जानते। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं जो फिर बापदादा ही जानते हैं। कितने गिरते हैं, कितनी तकलीफ होती है। ऐसे नहीं सदैव सभी पवित्र रह सकते हैं। पवित्र नहीं रहते तो फिर सजायें खानी पड़ती हैं। माला के दाने ही पास विद् ऑनर्स होते हैं। फिर प्रजा भी बनती है।

2] हम पढ़ते हैं, बेहद का बाप जो नॉलेजफुल है वह हमको पढ़ाते हैं, अमरपुरी अथवा हेविन में ले जाने के लिए हमको यह नॉलेज मिलती है। आयेंगे वहीं, जिन्होंने कल्प-कल्प राज्य लिया है। कल्प पहले मुआफिक हम अपनी राजधानी स्थापना कर रहे हैं। यह माला बन रही है, नम्बरवार।

3] बाप कहते हैं तुम पावन कैसे बनेंगे ! तुम पावन थे, फिर बनना है। देवता पावन हैं ना। बच्चे जानते हैं हम स्टूडेन्ट पढ़ रहे हैं। भविष्य में फिर सूर्यवंशी राज्य में आयेंगे। उसके लिए पुरूषार्थ भी अच्छी रीति करना है। सारा मार्क्स के ऊपर मदार है। युद्ध के मैदान में फेल होने से चन्द्रवंशी में चले जाते हैं।

4] बाप कहते हैं पवित्रता की प्रतिज्ञा कर फिर एक बार भी पतित बना तो की कमाई चट हो जायेगी। फिर वह अन्दर में खाता रहेगा। किसको भी कह नहीं सकेंगे कि बाप को याद करो।

5] मुख्य 8 रत्न ही हैं जो पास विद् ऑनर हो जाते हैं। वह कुछ भी सजा नहीं खाते हैं। यह बड़ी महीन बातें हैहं। कितनी ऊंची पढ़ाई है। स्वप्न में भी नहीं होगा कि हम देवता बन सकते हैं। बाप को याद करने से ही तुम पद्मापद्म भाग्यशाली बनते हो। इसके सामने तो वह धन्धा आदि कुछ भी काम का नहीं हैं। कोई भी चीज़ काम आने वाली नहीं है। फिर भी करना तो पड़ता ही है।

6] यह कभी भी ख्याल नहीं आना चाहिए कि हम शिवबाबा को देते हैं। अरे, तुम तो पद्मापद्मपति बनते हो। देने का ख्याल आया तो ताकत कम हो जाती है। मनुष्य ईश्वर अर्थ दान-पुण्य करते हैं, लेने के लिए। वह देना थोड़ेही हुआ। भगवान् तो दाता है ना। दूसरे जन्म में कितना देते हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है। भक्ति मार्ग में है अल्पकाल का सुख, तुम बेहद के बाप से बेहद सुख का वर्सा पाते हो।

❋ योग-

1] बाप को याद करना है। उठते, बैठते, चलते बाप को याद कर सकते हो। जो बाप हमको विश्व का मालिक बनते हैं, उनको बहुत रूचि से याद करना है।

❋ धारणा-

1] भगवान पढ़ाते हैं इसलिए कभी भी पढ़ाई मिस नहीं होनी चाहिए। जहाँ तक जीना है, वहाँ तक अमृत पीना है। पढ़ाई में अटेन्शन देना है, अबसेन्ट नहीं होना है। यहाँ-वहाँ से भी ढूँढकर मुरली जरूर पढ़नी है। मुरली में रोज़ नई-नई प्वाइंटस् निकलती रहती हैं, जिससे तुम्हारे कपाट ही खुल जायेंगे।

2] बाप समझाते हैं– बच्चे, तुम्हें बहुत-बहुत मीठा भी बनना है। कोई को दु:ख नहीं देना है।

3] जो तुम बाप के मददगार बनते हो, वही ऊंच पद पाते हो। वास्तव में तो मदद अपने को ही करनी है। पवित्र बनना है, सतोप्रधान थे फिर से बनना है जरूर।

4] अब बाप कहते हैं देह सहित देह के सभी सम्बन्धों से ममत्व तोड़ना है। यह सब पुराना है।

5] पूज्यनीय बनने का विशेष आधार पवित्रता पर है। जितना **सर्व प्रकार की पवित्रता** को अपनाते हो उतना सर्व प्रकार से पूज्यनीय बनते हो। जो विधिपूर्वक आदि अनादि विशेष गुण के रूप से पवित्रता को अपनाते हैं वही विधिपूर्वक पूजे जाते हैं। जो ज्ञानी और अज्ञानी आत्माओं के सम्पर्क में आते पवित्र वृत्ति, दृष्टि, वायब्रेशन से यथार्थ सम्पर्क-सम्बन्ध निभाते हैं, स्वप्न में भी जिनकी पवित्रता खण्डित नहीं होती है– वही विधिपूर्वक पूज्य बनते हैं।

❋ सेवा-

1] व्यक्त में रहते अव्यक्त फरिश्ता बनकर सेवा करो तो विश्व कल्याण का कार्य तीव्रगति से सम्पन्न हो।